Date-06-05-2020

Dr. Sanchlata

Asst. Professor (Guest faculty)

Dept. of Philosophy

Women's college, Samastipur

Email Id. - Snehababli1987@gmail.com

Cont. no - 8409587640

Class - B.A. - I (Hons.)

Topic - Refutation of Buddhism by Shankaracharya.

Scanned with CamScanner

(3) बौद्ध मत का खण्डन

शंकराचार्य बौद्ध मत का सर्वथैनाशिक मानते हैं; क्योंकि, बौद्ध संसार की सभी वस्तुओं को क्षणिक एवं विनाशक मानते हैं।

(1) सर्वास्तिवादी बौद्धों के अनुसार बाह्य भौतिक जगत् पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु के परमाणु के संघात निर्मित है तथा आध्यात्मिक जगत् रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान इन पंच स्कन्धों के संघात से निर्मित है। यहाँ शंकराचार्य का कहना है कि क्षणभंगवाद के कारण यहाँ अचेतन परमाणु और स्कन्धों से अपने-आप नहीं बन सकता। बौद्ध दर्शन इन संघातों के अतिरिक्त किसी चेतन जीवात्मा (नित्य) या नियन्ता (ईश्वर) में विश्वास नहीं करता जो संघात बना सके।

(2) क्षणभंगवाद का खण्डन : शंकराचार्य का आक्षेप है कि प्रतीत्यसमुत्पाद या द्वादश-निदान चक्र में पूर्व क्षण को परवर्ती क्षण का कारण नहीं माना जा सकता, क्योंकि परवर्ती क्षण की उत्पत्ति के समय पूर्व क्षण का

Scanned with CamScanner

विनाश हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि दो क्षणिक वस्तुओं के बीच किसी प्रकार के संबंध की कल्पना नहीं की जा सकती। बौद्ध मत में प्रत्येक कार्य प्रथम क्षण में उत्पन्न होकर द्वितीय क्षण में दूसरे कार्य को उत्पन्न कर स्वयं नष्ट हो जाता है। यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि द्वितीय कार्य-क्षण की उत्पत्ति के पहले ही प्रथम कारण-क्षण नष्ट हो जाता है तो वह द्वितीय कार्य-क्षण को किस प्रकार उत्पन्न कर सकता है? कार्य तभी उत्पन्न हो सकता है जब वह कारण से संबद्ध हो। किन्तु एक क्षण में कारण कार्य से सम्बद्ध नहीं हो सकता। कार्य उत्पन्न होने के लिये दूसरा क्षण चाहिए। जब यदि दूसरे क्षण तक कारण रहता तो क्षणभंगवाद का सिद्धान्त खण्डित हो जाता है।

यदि कारण से बिना संबंध रखे कार्य की उत्पत्ति को माना जाए तो फिर किसी भी कारण से कोई भी कार्य उत्पन्न हो सकता है। परन्तु ऐसा मानने पर कार्य-कारण का सिद्धान्त ही खण्डित हो जायेगा। अतः कारण को कार्य से अवश्य सम्बद्ध होना चाहिए। किन्तु क्षणिकवाद में कार्य-कारण सम्बद्ध स्थापित नहीं किया जा सकता।

(iii) क्षणभंगवाद को मानने पर आत्मा को भी क्षणिक मानना पड़ेगा। परन्तु ऐसा मानने पर ज्ञान, स्मृति एवं प्रत्यभिज्ञा की व्याख्या नहीं हो पायेगी।

(iv) क्षणभंगवाद कर्मवाद पर भी प्रहार करता है, इससे प्राणियों के कर्मों के अवस्थित्व एवं फल प्राप्ति की व्याख्या नहीं हो पाती।

Scanned with CamScanner